राजकीय महाराज आचार्य संस्कृत महाविद्यालय, गाँधी नगर, जयपुर

धर्मसभा, पंचांग श्रवण, वसंत सम्पात् चर्चा एवं पंचांग लोकार्पण

20-03-2023

रिपोर्ट

ज्योतिष शास्त्र को वेदाङ्ग माना गया है चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को भारतीय नव–संवत्सर का प्रारम्भ होता है। संवत्सर के प्रारम्भ में किये जाने वाले धार्मिक कार्यों में पंचांग श्रवण की परंपरा रही है। पंचांग श्रवण की फलश्रुति विभिन्न शास्त्रों में वर्णित की गयी है। महाविद्यालय में प्रतिवर्ष पंचांग श्रवण की परम्परा निरन्तर चली आ रही है इसी परम्परा का निर्वहन करते हुये सत्र 2023 में पञ्चाङ्ग लोकार्पण व श्रवण का कार्यक्रम किया गया। उक्त कार्यक्रम में मुख्यातिथि श्री अलबेली शरण जी महाराज, विशिष्ट अतिथि श्री आकाश रंजन जी (RAS) उप–शासन सचिव, महामण्डलेश्वर श्री बालमुकुन्दाचार्य जी हाथोज धाम, सारस्वत अतिथि श्रीसुदर्शनाचार्य जी महन्त श्री घाट के बालाजी व अध्यक्ष डॉ. विनोद शास्त्री जी पूर्व–कुलपति रहे। इसके अतिरिक्त अन्य वरिष्ठ ज्योतिर्विदों की गरिमामयी उपस्थिति में धर्म–चर्चा व उसके उपरान्त पंचांग–श्रवण तदुपरान्त पंचांग लोकार्पण किया गया। अन्त में प्राचार्य प्रो. भास्करशर्मा जी ने उद्बोधन दिया व धन्यवाद ज्ञापन प्रो. शालिनी सक्सेना द्वारा प्रदान किया गया व कार्यक्रम का संयोजन डॉ. आलोक शर्मा व डॉ. रवि शर्मा द्वारा किया गया।

समन्वयक

Prof. Shalini Saxena
Convener-IQAC
Govt. Maharaj Acharya Sanskrit
College, Jaipur (Raj.) 302015

आयोजन-समिति

पंचांगकर्ता
प्रो. भास्कर शर्मा 'श्रोत्रिय'
निदेशक
संस्कृत शिक्षा राजस्थान
प्राचार्य
राजकीय महाराज आचार्य
संस्कृत महाविद्यालय

प्रबंध-संपादक
प्रो. शालिनी सक्सेना
संयुक्त निदेशक
संस्कृत शिक्षा राजस्थान
प्रभारी प्राचार्य
राजकीय महाराज आचार्य
संस्कृत महाविद्यालय

प्रबंध-संपादक
डॉ. आलोक शर्मा
सहायक आचार्य
ज्योतिष

संपादक
डॉ. रवि शर्मा
ज्योतिषाचार्य
जयपुर

डॉ. जितेन्द्र कुमार अग्रवाल, डॉ. इन्दिरा खत्री, डॉ. कमलकिशोर सैनी, डॉ. रेखा वर्मा, श्री नमामी शंकर बिस्सा, डॉ. लक्ष्मी नारायण शर्मा, डॉ. सीमा जैन, डॉ. महेश कुमार शर्मा, डॉ. शम्भूनाथ झा, श्री शैलेन्द्र जैन, डॉ. अशोक पलसानिया, डॉ. भारती शर्मा, श्रीमती पूनम आर्य, श्री विष्णु शर्मा, श्री रमेश भार्गव, श्री कैलाशचन्द्र सैन, श्री अभिषेक भारद्वाज, श्री दीपक आलोरिया, श्री मोहित यादव, श्री रोशन मीणा, श्री कृष्णगोपाल गुजराती, श्रीमती सन्तोष मीणा, श्रीमती मनोहरी सोयाल।

भारतीय नूत्नवर्ष 2080 के उपलक्ष्य में

धर्मसभा, पञ्चाङ्ग-श्रवण, वसंत संपात चर्चा
एवं
पञ्चाङ्ग-लोकार्पण

राजकीय महाराज आचार्य संस्कृत महाविद्यालयीय

अनङ्काङ्क

महाराज-पञ्चाङ्गम्

पिङ्गलवत्सर

विक्रम् सम्वत् 2080, शक सम्वत् 1945, गतकलियुग 5124, भोग्यकलियुग 426876,
बुधवार, 22 मार्च 2023 से सोमवार, 08 अप्रैल 2024 तक

राजा
बुध

मंत्री
शुक्र

सम्पादक
डॉ. रवि शर्मा
विद्यावाचस्पति (ज्योतिष)
प्रवक्ता - ज्योतिष-विभाग

पञ्चाङ्गकर्ता-प्रधान सम्पादक
डॉ. भास्कर शर्मा 'श्रोत्रिय'
निदेशक :
निदेशालय संस्कृत शिक्षा : राजस्थान, जयपुर
प्राचार्य :
राजकीय महाराज आचार्य संस्कृत महाविद्यालय
गाँधी नगर, जयपुर, राजस्थान

प्रकाशक
NAAC (राष्ट्रीय मूल्यांकन प्रत्यायन परिषद) द्वारा बी ग्रेड प्राप्त
राजकीय महाराज आचार्य संस्कृत महाविद्यालय, जयपुर

20 मार्च 2023, मध्याह्न 11:30

आयोजक

राजकीय महाराज आचार्य संस्कृत महाविद्यालय

महात्मा गाँधी मार्ग, जयपुर - 302015 (राज.)
दूरभाष : 0141-2706608 ई-मेल : maharaj.college@gmail.com

पावन-सानिध्य

मुख्य अतिथि
शुकसम्प्रदायाचार्य श्री अलबेली शरण जी महाराज
सरस-निकुंज, जयपुर

विशिष्ट अतिथि
श्री आकाश रंजन
R.A.S.
उप-शासन सचिव
संस्कृत शिक्षा

विशिष्ट अतिथि
श्री श्री 1008 महामण्डलेश्वर
श्री बालमुकुन्दाचार्य जी महाराज
हाथोज धाम, जयपुर

अध्यक्ष
प्रो. विनोद शास्त्री
पूर्व कुलपति :
ज.रा.रा.सं.वि.वि.

सारस्वत अतिथि
सुदर्शनाचार्य जी महाराज
महंत – श्री घाट के बालाजी
मन्दिर, जयपुर

इस पुनीत अवसर पर आप सस्नेह निमन्त्रित है।

सम्मानित ज्योतिर्विद

पं. आदित्य मोहन शर्मा जयविनोदी जयपुर पंचांग	पं. चन्द्रशेखर शर्मा ज्योतिष सम्राट् पंचांग	पं. दामोदर प्रसाद शर्मा पं. बंशीधर ज्योतिष पंचांग
पं. अमित शर्मा सर्वेश्वर जयादित्य पंचांग	डॉ. विनोद शर्मा सह आचार्य : ज्योतिष	डॉ. कैलाश चन्द्र शर्मा सहायक आचार्य : ज्योतिष
डॉ. शिवाकांत मिश्र सहायक आचार्य : ज्योतिष	डॉ. भोजराज शर्मा जयपुर	डॉ. मोहन लाल शर्मा से. नि. प्रोफेसर
पं. जानकी वल्लभ शर्मा से. नि. व्याख्याता	डॉ. भगवान सहाय शर्मा से. नि. प्रोफेसर : धर्मशास्त्र	डॉ. लालचंद शर्मा से. नि. प्रोफेसर
याज्ञिक पं. गणपति दैवज्ञ वैदिक, जयपुर	डॉ. शशि प्रकाश शर्मा ज्योतिषाचार्य, जयपुर	पं. योगेश दाधीच ज्योतिषाचार्य, जयपुर
पं. सत्यनारायण शर्मा जयपुर	श्री ओमप्रकाश शर्मा पूर्व अधीक्षक, जंतर-मंतर	प्रो. गणपति लाल शर्मा जयपुर

पं. सियाराम शर्मा वैदिक, जयपुर	पं. लोकेश शर्मा वैदिक, जयपुर	पं. हेरम्ब शर्मा वैदिक, जयपुर	पं. अश्विनी चतुर्वेदी वैदिक, जयपुर

मनोज कुमार गुप्ता जयपुर	पं. मोहनलाल शर्मा जयपुर	पुष्पा जोशी जयपुर	पं. अनीष व्यास जयपुर	डॉ. दामोदर बंसल जयपुर

भारती चौधरी जयपुर	धर्मेंद्र खण्डेलवाल जयपुर	पं. चन्द्रमोहन दाधीच ज्योतिषाचार्य, जयपुर	पं. दिलीप के. अवस्थी जयपुर

श्री सौरभ अग्रवाल ईश्वरलाल बुकसेलर, जयपुर	श्री ओमप्रकाश शर्मा जगदीश संस्कृत पुस्तकालय, जयपुर
श्री विनोद नाटाणी हंसा प्रकाशन, जयपुर	श्री रामबाबू शर्मा राम आयुर्वेद संस्कृत बुक प्रकाशन, जयपुर

कालो हि कलनात्मकः

सम्माननीय .....

वेद-वेदाङ्ग की सनातन परम्परा का संरक्षण करने में सक्षम अपरा काशी के रूप में सुविख्यात जैपुर नगरी को कौन नहीं जानता! इसकी स्थापना 1727 ई. में महाराज सवाई जयसिंह द्वितीय के द्वारा की गई। यही नहीं वरन् ज्योतिष शास्त्रीय परम्परा को सुदृढ़ करने के क्षेत्र में जयपुर के महाराजा ने ज्योतिष वेधशाला (जंतर-मंतर) का निर्माण किया। इस वेधशाला के द्वारा खगोलीय (ज्योतिष-शास्त्रीय) ग्रह-नक्षत्रों के गति, युति एवं लय की गणना करने का मार्ग प्रशस्त हुआ। इसी परम्परा को पल्लवित करने की दृष्टि से जयपुर के महाराज सवाई रामसिंह जी द्वारा वेद-दर्शन-न्याय-साहित्य-व्याकरण-धर्मशास्त्र एवं ज्योतिषादि प्राच्य विद्याओं की विविध शाखाओं का संरक्षण एवं संवर्द्धन करने हेतु सन् 1852 ई. में राजकीय महाराज आचार्य संस्कृत कॉलेज की स्थापना की गई। आज यह संस्था भारतवर्ष में संस्कृत एवं संस्कृति के क्षेत्र मे अपने लक्ष्यों की पूर्ति करने हेतु अग्रसर है और यहाँ के उद्भट विद्वानों, राष्ट्रपति सम्मानित आचार्यो एवं मनीषी स्नातकों ने इस महाविद्यालय की प्रतिष्ठा को पुष्ट करते हुए प्रतिष्ठापित किया है। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद् (NAAC) द्वारा संस्कृत महाविद्यालयों में सर्वप्रथम इसी संस्था को 'बी' श्रेणी प्राप्त करने का गौरव प्राप्त है।

अध्ययन, अध्यापन एवं अनुसंधान की इस सरणी में धार्मिक व्रत-उत्सवों की तिथियों, ग्रहों के उदयास्त, अधिमास, सूर्य-चन्द्रादि के ग्रहण तथा तिथि, वार, नक्षत्र, योग, करण आदि का सम्यक् दर्शन कराने एवं जनसामान्य के लिए सर्वजनहिताय, सर्वजनसुखाय इस संस्था द्वारा 'महाराज-पंचांगम्' का अद्वितीय प्रकाशन आपके लिए प्रस्तुत है। आशा है सभी निश्चित रूप से लाभान्वित होंगे।

।। जयतु ज्यौतिषम्।।

पंचाङ्ग-फलमश्नुते

चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से भारतीय नवसम्वत्सर का प्रारम्भ होता है। सम्वत्सर के प्रारम्भ में किए जाने वाले धार्मिक कार्यो में वर्ष फल के श्रवण की परम्परा रही है। वर्ष फल श्रवण के लिए पंचांग ज्ञान आवश्यक है। वैसे तो प्रतिदिन पंचांग श्रवण किये जाने की शास्त्रीय परम्परा है परन्तु नवसम्वत्सर के अवसर पर चूंकि नवीन पंचांग प्रारम्भ होते हैं इसीलिए इस अवसर पर पंचांग श्रवण की परम्परा विशेष है। वत्सरारम्भ में वर्ष के स्वामी की पूजा का विधान भी प्राप्त होता है। पंचांग श्रवण के फल के सम्बन्ध में शास्त्रों में कहा गया है कि जो पंचांग का ज्ञान रखता है उसे पाप स्पर्श नहीं करता। तिथि श्रवण करने से श्री की प्राप्ति होती है, वार का श्रवण करने से आयु की वृद्धि होती है। नक्षत्र श्रवण करने से पापों का नाश होता है। योग का श्रवण करने से रोग मुक्ति होती है एवं करण का श्रवण करने से कार्यसिद्धि होती है। पंचांग के फल को सुनने से गंगा स्नान का फल प्राप्त होता है। देवालयों में, राजपरिवारों में एवं सन्त समाज में इसीलिए पंचांग श्रवण की परम्परा आज भी है। राजकीय महाराज आचार्य संस्कृत महाविद्यालय न केवल राजस्थान अपितु भारतवर्ष के प्राचीनतम महाविद्यालयों में से अन्यतम है। यह महाविद्यालय प्राच्यविद्याओं के संरक्षण एवं सम्वर्द्धन में सतत क्रियाशील है। महाविद्यालय की समृद्ध ज्योतिषीय परम्परा रही है। इसी समृद्ध परम्परा को परिपुष्ट करते हुए महाविद्यालय द्वारा नवीन सम्वत्सर विक्रम सम्वत् 2080 का पंचांग प्रकाशित किया गया है। इस पंचांग के विमोचन के अवसर पर नवसम्वत्सर की पूर्व सन्ध्या पर पंचांग श्रवण की परम्परा का निर्वहन करने जा रहा है। इस अवसर पर आपकी महनीय उपस्थिति सादर प्रार्थनीय है।

आयोजन स्थल :

राजकीय महाराज आचार्य संस्कृत महाविद्यालय

महात्मा गाँधी मार्ग, जयपुर - 302015 (राज.)

दूरभाष : 0141-2706608 ई-मेल : maharaj.college@gmail.com

धर्मसभा, पञ्चाङ्ग-श्रवण, वसंत संपात चर्चा

एवं

पञ्चाङ्ग-लोकार्पण

सोमवार, 20 मार्च 2023

डॉ. भास्कर शर्मा 'श्रोत्रिय'
प्राचार्य एवं निदेशक

प्रो. शालिनी सक्सेना
प्रभारी प्राचार्य एवं संयुक्त निदेशक

आयोजक :

राजकीय महाराज आचार्य संस्कृत महाविद्यालय

NAAC (राष्ट्रीय मूल्याकंन एवं प्रत्यायन परिषद) द्वारा बी ग्रेड प्राप्त

दैनिक भास्कर

जयपुर 21-03-2023

धर्माचार्यों एवं ज्योतिषियों ने संवत 2080 के व्रत-पर्वों पर की चर्चा, किया पंचांग का लोकार्पण

वृश्चिक लग्न में होगा विक्रम संवत 2080 का प्रवेश: श्रेष्ठ वर्षा के योग

सोशल रिपोर्टर | जयपुर

भारतीय कैलेंडर अनुसार इस बार विक्रम संवत 2080 का प्रवेश वृश्चिक लग्न में होने जा रहा है। इस वर्ष रोहिणी का निवास 'तट' एवं समय का वास धोबी के घर पर होने से श्रेष्ठ वर्षा के योग बनेंगे जिससे पैदावार में बढ़ोतरी होगी। साथ ही औद्योगिक विकास का पहिया तेजी पकड़ेगा। यह बात धर्माचार्यों और ज्योतिषियों ने पंचांग-वाचन करते हुए कही। सोमवार को यहां राजकीय महाराज आचार्य संस्कृत महाविद्यालय में पंचांग लोकार्पण किया गया। साथ ही धर्मसभा, पंचांग श्रवण और वसंत संपात चर्चा भी की गई।

कार्यक्रम के आयोजक और राजकीय महाराज आचार्य संस्कृत महाविद्यालय के प्राचार्य एवं संस्कृत शिक्षा के निदेशक डॉ. भास्कर शर्मा 'श्रोत्रिय' ने बताया कि प्रकृति में परिवर्तन के साथ ही भारतीय संवत्सर का भी परिवर्तन हो रहा है। 22 मार्च बुधवार चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को पिंगल नामक संवत्सर का प्रारंभ हो रहा है। यह भारतीय कालगणना का 2080वां विक्रम संवत है।

संयुक्त निदेशक प्रो. शालिनी सक्सेना ने बताया कि भारतीय संस्कृति का निर्वहन करते हुए विषुव दिन, जिसे वसंत सम्पात भी कहते है। इसी दिन सूर्य का उत्तर गोल में भी प्रवेश हो रहा है। उसी पावन पर्व के उपलक्ष्य में अपरा काशी जयपुर के एकमात्र और वर्ष 1852 में स्थापित वैदिक परंपरा के वाहक राजकीय महाराज आचार्य संस्कृत महाविद्यालय में धर्मसभा, वसंत सम्पात, पंचांग श्रवण अवसर पर पंचांग लोकार्पण भी किया गया। डॉ. आलोक शर्मा के अनुसार कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि आरएएस अधिकारी आकाश रंजन, हाथोज धाम के महंत बालमुकुंदाचार्य, कार्यक्रम के अध्यक्ष संस्कृत विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति प्रो विनोद शास्त्री और सारस्वत अतिथि घाट के बालाजी के महंत सुदर्शनाचार्य रहे।

धान्य, जौ, गेहूं, चना, बाजरा की अच्छी होगी पैदावार

पंचांग के संपादक डॉ. रवि शर्मा ने बताया कि विक्रम संवत् 2080 का प्रवेश वृश्चिक लग्न में होगा। इस वर्ष रोहिणी का निवास 'तट' एवं समय का वास धोबी के घर पर होने से श्रेष्ठ वर्षा के योग बनेंगे, जिससे धान्य, जौ, गेहूं, चना, बाजरा, मूंग, मोठ आदि की पैदावार बढ़िया होगी। औद्योगिक विकास का पहिया तेजी पकड़ेगा। इस वर्ष वर्षा की दृष्टि से दक्षिणी-पूर्वी भारत में अच्छी और राजस्थान, दिल्ली, हरियाणा, पंजाब, उत्तरप्रदेश, मध्यप्रदेश, गुजरात में मध्यम वर्षा के योग बनेंगे।